4

ज़ुबैदा हाज़िर हो

तिलक राज पंकज*

'सर्व शिक्षा अभियान' के तहत प्राथमिक शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कई कदम उठाए जा रहे हैं। इससे बच्चों के नामांकन में तो बढ़ोतरी दर्ज़ हुई है, लेकिन गुणवत्ता स्तर में कोई विशेष प्रगति नहीं हुई है। सरकार द्वारा गुणवत्ता स्तर सुधारने के लिए कई कदम उठाए गए हैं जैसे – मिड-डे मील, निःशुल्क पाठ्यपुस्तक आदि। लेकिन फिर भी स्कूल में बच्चों के ठहराव को रोकने में सरकार पूर्ण रूप से सफल नहीं हो पा रही है। एक ओर जहाँ सरकार बच्चों के लिए योजनाएँ व सुविधाएँ मुहैया करा रही है, वहीं दूसरी ओर शिक्षकों का भी यह दायित्त्व है कि वह यह जानने का प्रयास करें कि बच्चों को किस स्तर पर क्या परेशानी है या फिर वह क्यों कक्षा से लगातार अनुपस्थित हैं। बच्चों के प्रति शिक्षकों की ज़िम्मेदारी को प्रस्तुत कर रहा है यह लेख– ज़ुबैदा हाज़िर हो।

एक स्कूल में शिक्षिका कक्षा की हाज़िरी लेते वक्त एक लड़की का नाम पुकारती है – ज़ुबैदा

कक्षा से कोई जवाब नहीं आया।

कुछ समय बाद बच्चों ने जवाब दिया, 'मैडम जी, ज़ुबैदा आज फिर स्कूल नहीं आयी।'

मैडम जी ने आज फिर ज़ुबैदा के नाम के आगे गैर-हाज़िर अंकित किया। उसके बाद मैडम जी अपने काम में व्यस्त हो गईं।

लेकिन कुछ देर बाद मैडम जी सोच में पड़ गईं और सोचने लगीं कि कितनी बार ज़ुबैदा के परिवार से मिली हूँ। लड़कियों की तालीम की ज़रूरत उनको समझाई, लेकिन उन्हें ना जाने कब समझ आएगी। मुझे और भी कई काम हैं। अब रोज-रोज ज़ुबैदा के पीछे नहीं घूम सकती। उसका नाम भी रजिस्टर से हटा नहीं सकती। हजारों मुसीबतें हैं। पता नहीं कब लोगों को शिक्षा की अहमियत समझ आएगी।

थोड़ी देर बाद मैडम ने बच्चों से कहा, ''ज़ुबैदा की माँ से कहना कि कल वह मुझसे आकर मिलें।''

* *अतिरिक्त ब्लॉक प्रा.शि.अधिकारी*, तिजारा(अलवर), राजस्थान

जुबैदा अकेली ऐसी लड़की नहीं है, जो स्कूल ना जाती हो। जुबैदा जैसी दूसरी लड़कियाँ भी उसके गाँव में हैं। जुबैदा के दिमाग में शिक्षा को लेकर कई सवाल उठते हैं जैसे –

- आखिरकार वह स्कूल क्यों जाए?
- क्यों उसके लिए तालीम ज़रूरी है?
- स्कूल में उसे ऐसा क्या सिखाया जायेगा कि वह सीख उसकी जिंदगी में काम आएगी?
- वैसे भी दूसरी लड़कियों की तरह जल्दी ही उसके माँ-बाप उसकी शादी कर देंगे।
- घर के कामों से उसे फुरसत ही कब मिलती है?
- स्कूल में तालीम ले रहे बच्चों में और नहीं जा रहे बच्चों में कोई खास फर्क नज़र नहीं आता।
- जुबैदा को दिन में एक बार मदरसे/मकतब जाकर दीनी तालीम भी लेनी होती है।
- गाँव की कुछ और लड़कियाँ भी कुछ दिन/महीने/साल में स्कूल छोड़कर घर के ही काम कर रही हैं।
- वैसे भी उसके गाँव में बड़ी मुश्किल से ही स्कूल जाने की छूट दी जाती है, वह भी हजारों पाबंदियों के साथ।
- बड़ी लड़कियों को तो स्कूल जाने के लिए दूर पैदल जाना पड़ता है।

जुबैदा के सवाल किसी के भी दिमाग को झकझोरते हैं कि वह तालीम लेने स्कूल क्यों जाए? सरकार ने उसकी जिंदगी सँवारने के लिए, उसके सपनों को साकार करने के लिए क्या इंतजाम किए हैं? जुबैदा की तालीम के लिए क्या-क्या बुनियादी सहूलियतें सरकार द्वारा मुहैया कराई जा रही हैं?

हर जुबैदा यह जानना चाहती है कि –

- क्या उसे बिना जाति, रंग, धर्म, भाषा, ऊँच-नीच, अमीर-गरीब, क्षेत्र अथवा जेंडर के भेदभाव के तालीम दी जाएगी?
- क्या स्कूल का पाठ्यक्रम उसके भावी जीवन को सँवारने में मददगार साबित होगा?
- क्या स्कूल का माहौल उसकी तालीम के माकूल होगा?
- क्या स्कूल से दी जाने वाली तालीम से उसकी समझ, बुद्धि व जीवन कौशल का विकास हो सकेगा?
- क्या सरकार उसे स्कूली तालीम हासिल कराने की जिम्मेदारी लेगी?

इस तरह की हजारों जुबैदाएँ हैं, जो स्कूलों में हाजिर होते हुए भी गैर-हाजिर हैं। कहीं, स्कूल जुबैदा का इंतजार कर रहा है, तो कहीं जुबैदा स्कूल का इंतजार कर रही है। सरकार के नुमाइंदे यह भी जानते हैं कि जुबैदा को स्कूल से जोड़ने, उसका स्कूल में ठहराव बनाये रखने या उसका ड्राप -आउट रोकने तथा अच्छी तालीम देने में क्या दिक्कतें हैं लेकिन कोई भी इस मामले में कुछ करता नज़र नहीं आता। ज़रूरत है दूरअंदेशी की, ज़रूरत है नयी सोच की। 'बाल शिक्षा का अधिकार' – कानून के तहत जिन बुनियादी सहूलियतों का सरकार द्वारा मुहैया कराया जाना ज़रूरी है, उनके अलावा

भी कुछ ऐसे मुद्दे हैं, जिन पर गौर फरमाना व उन्हें अमल में लाने की आवश्यकता है तभी 'सर्व शिक्षा अभियान' सफल होगा ।

ज़ुबैदा तथा उसके जैसी दूसरी लड़कियाँ चाहती हैं कि –

- उन्हें पाँचवीं कक्षा तक तालीम गाँव/वार्ड/ढाणी में ही हासिल हो तथा आठवीं कक्षा तक की तालीम के लिए भी दूर नहीं जाना पड़े।
- उन्हें पाँचवीं कक्षा के बाद या तो लड़कियों के स्कूल में दखिला मिले या स्कूल में मैडम जी पढ़ाए।
- यदि पाँचवीं कक्षा के बाद उन्हें तालीम हासिल करने के लिए दूर जाना पड़े, तो सरकार उसके लिए आने-जाने के साधन का इंतजाम करे।
- यदि स्कूल में मैडम जी को आने में दिक्कत है तो सरकार उनके लिए साधन के इंतजाम करे।
- उन्हें स्कूल में आठवीं क्लास के बाद तालीम के साथ-साथ कम्प्यूटर, सेहत, जीवन, कौशल व समझ बढ़ाने की तालीम भी हासिल हो।
- उन्हें पूरे साल में कम से कम 180 से 240 दिन तक मैडम जी/सर जी स्कूल में तालीम दें, ताकि उसे अच्छी तालीम हासिल हो सके।
- सरकार उनके जैसे दूसरों बच्चों के जन्म का पंजीकरण ज़रूर करे, जिससे तालीम व सेहत, शादी-ब्याह आदि काम ठीक वक्त पर हो सके।
- सरकार स्कूल, आँगनवाड़ी केंद्र, स्वास्थ्य केंद्र व स्थानीय में आपसी तालमेल कायम करे, ताकि बच्चे को पैदा होते ही सिलसिलेवार सँभाला जा सके।
- सरकार उनके इलाके में मौजूद समुदाय के मुखियाओं, दीनी तालीम देने वालों, समाज के लोगों से बातचीत करे तथा उन्हें भी बच्चों को तालीम दिलाने की जिम्मेदारी सौंपे।
- उनके इलाके में मौजूद मदरसों/मकतबों में तालीम लेने वाले बच्चों की सहूलियतों का ख्याल रखा जाए।

तो हो सकता है फिर कोई ज़ुबैदा स्कूल से गैर-हाज़िर ना हो। ज़रूरत है एक ईमानदार कोशिश की।